(संगोष्ठी कार्य विवरण)

तबले की परंपरागत वादन शैली का अस्तित्व : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

(Conference Proceeding)
Existence of Traditional Tabla Playing style in current perspective

राष्ट्रीय संगोष्ठी

13–14 फरवरी 2018

डॉ. राहुल स्वर्णकार
संपादक एवं संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

संगीत विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म.प्र.
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Scanned with CamScanner

संगीत जगत् की विख्यात विभूतियों को शत्-शत् नमन...

संगीत विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म.प्र.

(सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी)

Ph- 07582-265831

E-mail : musicdhsgsu@gmail.com

ND PUBLICATION

Badapur South East Delhi 110044

www.ndpublication.com

Email: ndpublication@gmail.com

Mob: 7566257575

ISBN

978-81-934037-8-5

तबला वादन परंपरायें (एक सकारात्मक अध्ययन)

डॉ. राहुल स्वर्णकार
सहा. प्राध्यापक (संगीत)
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारतीय संगीत में तबला वाद्य का प्रचार जब से हुआ है तब से तबला अपनी अटखेलियों के गुण के कारण समूचे भारत के संगीत में अपनी चंचलता से प्रत्येक सुनकार का मन मोह ही लेता है। इसकी चंचलता को युवा और तहजीब, संस्कारी बनाने के लिए नीति निर्धारक लोगों ने अपनी परंपरा या सांगीतिक बंधनों के ताने बाने में इसे सामिल किया और अन्य विधाओं की भाँती तबले को भी घराने के नियमों की मुख्य धारा से जोड लिया। यहाँ से तबले का सफर भी अन्य विधाओं के समकक्ष सुचारू रूप से चलने लगा। घरानों ने अपने सिद्वांत निर्धारित कर उन लोगों को समान अधिकार दिला दिया जो तात्कालिक समय में साहित्याभाव झेल रहे वाद्य को समकक्ष मनाने में आनाकानी का विचार मन में रखते थे। घरानों का चलन बढने और लोगों की जरूरतों को निभाने में तबला और उसका साहित्य चहूं दिशाओं में अपना परचम लहराने लगा था। किन्तु इसके उदासीन परिणाम मिलने तब प्रारंभ हो गये जबकि प्रत्येक वादक कलाकार अपने आप को किसी ना किसी घराने का वंशज बताने लगे और सकारात्मक शिक्षा के आभाव में प्राप्त सबक या बंदिशों को अपने श्रश्जनात्मक गुण से बजाकर उसे परंपरा में ढाल कर प्रस्तुति को रोचक बनाने लगे, जो घरानों का पूर्ण रूप से निर्वाह करने वाले लोगों को स्वीकार नहीं था। शायद इसी अस्वीकार की भैंट चढें कलाकारों को घरानेदार पद्धति होते हुए भी उन्हें घरानों के अभावग्रस्त दल निर्मित करने की जरूरत आन पडी और समूचे संगीत जगत के समक्ष यह प्रश्न रखा कि घराने की उपादेयता क्या है? क्या एक सकारात्मक शिक्षा कि पद्धति किसी कलाकार को उसका स्थान दिलाने मे समर्थ है अथवा नहीं। इस पर विस्तार से चर्चा की जायेगी भारतीय संस्कृति में घराना शब्द इसके जन्म से ही प्रचार में है। जो प्राचीन शब्द संम्प्रदाय से मिलता है।

भारतीय संस्कृति में संम्प्रदाय शब्द का प्रयोग प्राचीन समय से होता रहा है जो संस्कृत से लिया गया है "सम्" का अर्थ पूर्ण रूप से, समान रूप से और "प्रदाय" का अर्थ है प्रदान करना अर्थात संप्रदाय का अर्थ पूर्ण रूप से प्रदान करना है। शारंगदेव ने भी संगीत रत्नाकर में सुसम्प्रदाय शब्द का प्रयोग किया है।[1] अर्थात संम्प्रदाय शब्द घराना से भी प्राचीन है। जिसमें नाद या स्वर संपूर्ण ब्रह्मांड को सम्मोहित करता है। हमारे इस सनातन संगीत में कुछ शैलिगत भिन्नताऐं तो हो सकती है किन्तु घराना शब्द हमारी सनातन संस्कृति का प्रतीक नहीं है।[2] वर्तमान समय में घराने शब्द बड़े ही विवाद का विषय है । घराने का तात्पर्य यह है कि परंपराओं की उत्तरोत्तर वृद्धि हो, ऐसे में कोई दो कलाकार एक दूसरे की संपूर्ण छवि को कैसे प्राप्त कर सकता है। यदि नवीनीकरण घराने के भाव को बोझिल करती है तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति एक जैसी छवि लेकर जन्मेगा और अंत तक एक ही छवि लेकर जीयेगा। ऐसे में श्रृंगारिकता के भाव की आवश्यकता समय के साथ समाप्त होने लगेगी। तबले में प्रयुक्त किये जाने वाले शुद्ध वर्ण प्रायः समस्त घरानों (खुले या बंद बाज) में समान रूप से प्रयोग किये जाते हैं। ज्ञातव्य है कि सीमित वर्णों के प्रयोग तथा एकल और संयुक्त वर्णों की निर्मिती से तबले का साहित्य निरंतर विकास कर रहा है। क्योंकि निर्धारित वर्णो के अतिरिक्त कोई ऐसी पद्धति नहीं है जिसके प्रयोग से कोई अभूतपूर्व बोलों का वादन किया जा सके। जब तबले का जन्म ही रंजकता प्रदान करने

ISBN-978-81-934037-8-5

Self Attested

Scanned with CamScanner